विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 23 : अंक 46 : नई दिल्ली : 9-15 फरवरी 2018

१५४ वें मर्यादा महोत्सव के उपलक्ष में
परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

करें हम मर्यादा का मान।
मर्यादा के परिपालन से बनता मनुज महान।।

एक नाथ के अनुशासन में, तेरापंथ चलेगा।
विनय-समर्पण से शास्ता की आज्ञा शीश धरेगा।
गुरु-इंगित समुचित आराधन से मिटता व्यवधान।।१।।

चतुर्मास हो उसी क्षेत्र में, जहां आर्यवर चाहें।
हो विहार का मार्ग वही, गुरुवर जो दिशा दिखाएं।
पूज्य-दृष्टि-अनुसरण करें हम, हो आज्ञा सम्मान।।२।।

अपना-अपना शिष्य बनाना हमको मान्य नहीं है।
एक सुगुरु के शिष्य रहें सब, बस सम्मान्य यही है।
नहीं व्यक्तिगत चेला-चेली, तेरापथ-पहचान।।३।।

योग्य व्यक्तियों की हो दीक्षा स्वामीजी का शिक्षण।
गुणवत्तायुत संख्यावत्ता भैक्षवगण आभूषण।
ज्ञान चरित्र स्वास्थ्य कौशल से, बढ़े संघ की शान।।४।।

वर्तमान आचार्यप्रवर भावी का चयन करें जब।
साधु-साध्वियां हर्षयुक्त स्वीकार करें उसको सब।
पदलिप्सा के परित्याग से पाएं गौरव स्थान।।५।।

वीर भिक्षु जय तुलसी महाप्रज्ञ का स्मरण करें हम।
संघ-पुरुष की सुखद शरण में गुणगण वरण करें हम।
कटक ओड़िशा की धरती पर मर्यादोत्सव गान।
'महाश्रमण' दक्षिण यात्रा का सुफल बने अरमान।
प्रभुकृपया दक्षिण यात्रा का सुफल बने अरमान।।६।।

लय - यही है जीने का विज्ञान.....

१५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह के प्रथम दिन परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पावन प्रवचन

२२ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का उद्घाटन दिवस है। वर्षों से मर्यादा महोत्सव के समारोह का उद्घाटन सेवा की बात से होता आ रहा है। शास्त्रकार ने एक सुन्दर निर्देश दिया कि तब तक धर्म का समाचरण करो, जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, जब तक व्याधि न बढ़ जाए और जब तक इन्द्रियां क्षीण न हो जाएं।

इस चिंतन को सेवा के संदर्भ में भी देखता हूं कि सेवा कब तक दे देनी चाहिए और सेवा लेने की स्थिति कब आती है। शास्त्रकार ने जो तीन बातें बताई हैं, वे सेवा लेने की स्थितियां होती हैं। वृद्ध, बीमार और इन्द्रियों से दुर्बल व्यक्ति सेवा लेने की स्थिति में आ जाता है। उसे सेवा दी जानी चाहिए। आचार्य और उपाध्याय भी स्वस्थता, युवावस्था और सक्षमता की स्थिति में भी सेवा लेने के अधिकारी होते हैं। शैक्ष साधु-साध्वियां भी सेवा लेने के अधिकारी होते हैं। उन्हें संभालना होता है, उन्हें प्रशिक्षण देना होता है। शरीर की असमर्थता की स्थिति आदमी को सेवा लेने लायक बना देती है।

जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करने लग जाए, जब तक व्याधि न बढ़े और जब तक इन्द्रिय शक्ति क्षीण न हो जाए, तब तक सेवा कर लेनी चाहिए। बाद में तो सेवा लेनी पड़ सकती है। हमारे साधु-साध्वियों ने सेवा देने के लिए आवेदन किया है, यह अच्छी बात है। आवेदन कभी स्वीकार हो, कभी न भी हो, पर आवेदन अपने आप में अच्छी बात है।

आदमी को यथासंभव औचित्यानुसार स्वावलंबी रहना चाहिए। जब तक स्वयं कार्य करने की सक्षमता हो, तब तक दूसरों पर आधारित क्यों बनना चाहिए? परवशता दुःख और स्ववशता सुख है। आदमी को परावलंबी बनने से बचने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। शरीर सेवा देने में सक्षम है और अवसर भी है तो ज्यादा से ज्यादा सेवा देने का भाव रखना चाहिए। संघ की सेवा करें, रुग्णों की सेवा करें, अक्षमों की सेवा करें, सेवा सापेक्षों की सेवा करें।

सेवा का इतना महत्त्व है कि सेवा करने वाला साधु महानिर्जरा का भागीदार और महापर्यवसान अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। वैयावृत्य से तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का निबंधन भी हो सकता है। तीर्थंकर अध्यात्म के क्षेत्र में सबसे बड़े आदमी हैं, ऐसा मुझे लगता है। सेवा करने वाला व्यक्ति तीर्थंकर बनने का स्थान प्राप्त कर सकता है। जो साधु रुग्ण की सेवा करता है, वह व्यक्ति मानों तीर्थंकरों की सेवा करता है।

सेवा करने के लिए मानसिक उत्साह रहना चाहिए। हमारे यहां कहा जाता है कि सेवा के लिए कहीं जाने के लिए कहा जाए तो मना नहीं करना चाहिए। सेवा की अपेक्षा हो तो कहीं भी जाने के लिए तैयार रहना चाहिए। हालांकि और किसी काम के लिए भी भेजा जाए तो जाना ही चाहिए, पर सेवा के लिए तो और विशेष रूप से तैयार रहना चाहिए। रात को एक बजे भी उठाकर सेवा के लिए कह दिया जाए तो तत्पर रहना चाहिए।

हमारे धर्मसंघ में सेवा की व्यवस्था भी की जाती है। मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के प्रथम दिन अर्थात् बसंत पंचमी के दिन साधु-साध्वियों के सेवाकेन्द्रों में सेवा देने के लिए साधु-साध्वियों की नियुक्ति की जाती है। हमारे धर्मसंघ में सेवा के कई केन्द्र बने हुए हैं। जहां अक्षम साधु-साध्वियों को रखा जाता है और हर वर्ष उनकी सेवा के लिए सिंघाड़ों और व्यक्तियों को यथापेक्षा नियुक्त किया जाता है।

उन सेवाकेन्द्रों में सबसे प्राचीनतम सेवाकेन्द्र है लाडनूं का। लाडनूं परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की जन्मभूमि और परम पूज्य डालगणी की महाप्रयाण भूमि है। वहां जैन विश्व भारती जैसी संस्था है, जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय है। हमारा भंडार लाडनूं में है, जहां कितने पुराने कागज, पोथियां आदि हैं।

समणश्रेणी का मुख्यालय और मुमुक्षु बाइयों का मुख्यालय (पारमार्थिक शिक्षण संस्था) भी लाडनूं में हैं। लाडनूं तेरापंथ की राजधानी है। उस क्षेत्र पर पूर्वाचार्यों की बड़ी कृपा भी रही है, मानों लाडनूं आचार्यों का लाडला क्षेत्र रहा। गुरुदेव तुलसी ने तो लाडनूं में कितना प्रवास किया था। लगातार दो-दो चौमासे गुरुदेव ने लाडनूं में किए थे। वह अच्छा क्षेत्र है और इतने वर्षों से वहां सेवाकेन्द्र चल रहा है। साध्वियों के सेवाकेन्द्र की दो हवेलियां मानों तीर्थ हैं, जहां अक्षम साध्वियां रहती हैं। अग्रिम वर्ष में साध्वी संयमलताजी लाडनूं सेवाकेन्द्र में सेवा का दायित्व संभालें।

दूसरा सेवाकेन्द्र है गंगाशहर। गंगाशहर परम पूज्य गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण स्थल है। जहां आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान 'नैतिकता का शक्तिपीठ है।' परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को 'महाप्रज्ञ' अलंकरण गंगाशहर में प्राप्त हुआ था। आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने उत्तराधिकारी की घोषणा गंगाशहर में की थी। साध्वीप्रमुखाजी का मनोनयन गंगाशहर में हुआ था। तेरापंथ के अनेक ऐतिहासिक प्रसंगों से जुड़ा हुआ गंगाशहर मानों सुरंगा क्षेत्र है। उस चोखले का वह बड़ा और अच्छा क्षेत्र है। वहां के लोगों में कितनी भक्ति-भावना है। साध्वी मधुरेखाजी और साध्वी विशदप्रज्ञाजी--ये दोनों सिंघाड़े गंगाशहर सेवाकेन्द्र में अग्रिमकाल में सेवा का दायित्व संभालें।

साध्वियों का तीसरा केन्द्र है बीदासर, जिसे समाधिकेन्द्र की संज्ञा दी गई है। यह मुख्यतया अग्रणी साध्वियों के लिए निर्धारित सेवाकेन्द्र है। बीदासर में ४३ दीक्षाएं एक साथ हुई थीं। उस दीक्षा समारोह में दीक्षित अनेक साधु-साध्वियां गुरुकुलवास में भी हैं। बीदासर परम पूज्य आचार्यश्री मघवागणी का जन्म स्थान है। बीदासर भी आचार्यों का कृपापात्र क्षेत्र रहा है। जयाचार्य आदि का कितना अनुग्रह बीदासर पर रहा होगा। मानों बीदासर क्षेत्र आचार्यों का 'मोहवी बेटा' जैसा रहा है। वहां के श्रावकों में भी कितनी भक्ति-भावना है। बीदासर अग्रणी साध्वियों का सेवाकेन्द्र है, जिसे सामधिकेन्द्र कहा जाता है। आगामी कार्यकाल में साध्वी शुभप्रभाजी और साध्वी संपूर्णयशाजी बीदासर समाधिकेन्द्र में सेवा का दायित्व संभालें।

साध्वियों का चौथा केन्द्र है--श्रीडूंगरगढ़। जहां गुरुदेव तुलसी के नाम से हॉस्पिटल भी है। हॉस्पिटल होने से चिकित्सा की दृष्टि से कुछ सुविधा भी है। अच्छा श्रद्धालु क्षेत्र है। मैंने दीक्षा के बाद गुरुदेव तुलसी के पहली बार दर्शन श्रीडूंगरगढ़ में अथवा उसके परिपार्श्व में किए। उस वर्ष (विक्रम संवत २०३१) का मर्यादा महोत्सव गुरुदेव तुलसी का श्रीडूंगरगढ़ में था। वहां वयोवृद्धा साध्वी लाडांजी विराजती थीं। वे डालगणी के युग की साध्वी थीं। उनसे हम लोग मिले थे। आगामी कार्यकाल में साध्वी सोमयशाजी और साध्वी प्रसन्नयशाजी श्रीडूंगरगढ़ सेवाकेन्द्र में सेवा का दायित्व संभालें।

साध्वियों का पांचवां सेवाकेन्द्र है--राजलदेसर। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का युवाचार्य मनोनयन राजलदेसर के डागाजी के स्थान में हुआ था। राजलदेसर में पहले साध्वी खूमांजी (लाडनूं) विराजती थीं। मैं जब बालमुनि था, तब उन्हें वहां देखा था। वे डालगणी के समय की साध्वी थीं। वे मातुश्री छोगांजी की सेवा में रहीं थीं और साध्वी खूमांजी के पास साध्वी पानकुमारीजी 'प्रथम' रही थीं। राजलदेसर में कई वर्षों से सेवाकेन्द्र चल रहा है। वहां अब सेवा लेने वाली साध्वियां नगण्य-सी रह गई हैं। अभी वहां एक साध्वीजी सेवाग्राही के रूप में है। उन एक साध्वीजी के लिए सिंघाड़े की व्यवस्था करना चाहूंगा। वहां अग्रिम कार्यकाल में साध्वी संघप्रभाजी का सिंघाड़ा सेवा का कार्य संभाले।

संतों के दो सेवाकेन्द्र हैं। उनमें पुराना सेवाकेन्द्र छापर का है। छापर संतों की दृष्टि से मुख्य सेवाकेन्द्र है। छापर एक छोटा सा गांव है, जहां वर्षों से पूजनीय संत विराजमान रहते हैं। परम पूज्य कालूगणी की जन्मभूमि छापर है। छापर के लिए मेरा चतुर्मास भी कहा हुआ है। मेरा वचन है कि थली का प्रथम चतुर्मास यथासंभव छापर में करना है। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के समय से छापर को चतुर्मास मिला हुआ था। मैंने उसको

एक बार वापस ले लिया था। उस उधार लिए चतुर्मास को मुझे चुकाना भी है। छापर में वर्तमान में मुनि तत्त्वरुचिजी की चाकरी है, वे आगामी कार्यकाल में दुबारा सेवा का दायित्व संभालें।

संतों का दूसरा सेवाकेन्द्र जैन विश्व भारती, लाडनूं है। जैन विश्व भारती एक ऐसी संस्था है, जो मानों परम पूज्य गुरुदेव तुलसी का अवदान है। वह तेरापंथ समाज की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। उसका परिसर भी सुन्दर लगता है, जहां कितने मकान हैं और कितनी गतिविधियां चलती हैं। जैन विश्व भारती में संत भी रहते हैं, समणियां भी रहती हैं और मुमुक्षु बाइयां भी रहती हैं। अभी तो वहां साध्वियां भी रह रही हैं। मानों कितनी आध्यात्मिक संपदा जैन विश्व भारती में विराजमान रहती है। वहां गुरुदेव तुलसी का कितना प्रवास हुआ। गुरुदेव तुलसी जैन विश्व भारती परिसर में प्रायः प्रातः भ्रमण किया करते थे। आचार्य महाप्रज्ञजी भी वहां प्रातः भ्रमण करते थे। वहां बड़ा ग्रंथागार भी है। वहां ज्ञान की आराधना भी होती है। मुनि जयकुमारजी को इस बार जैन विश्व भारती के लिए विहार करवाया है। वे उस ओर जा रहे हैं। इस बार मुनि जयकुमारजी के सहवर्ती संत जैन विश्व भारती के सेवाकेन्द्र की सेवा का दायित्व संभालें। उनके जैन विश्व भारती पहुंचने में कुछ समय लग सकेगा। जब तक वे जैन विश्व भारती न पहुंचें, सेवा को न संभाल लें, तब तक वर्तमान में सेवा का दायित्व संभाल रहे मुनि स्वस्तिककुमारजी का सिंघाड़ा जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र का जिम्मा संभालता रहे।

हमारे साधु-साध्वियां जिनको सेवा का दायित्व सौंपा गया है, वे खूब अच्छे ढंग से निर्जरा की भावना और कर्त्तव्यनिष्ठा से खूब अच्छी सेवा करें। सेवाग्राहियों को चित्त समाधि पहुंचाएं, हमारी मंगलकामना।'

१५४वें मर्यादा महोत्सव के मध्य दिन
परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पावन प्रवचन

किसी भी संगठन के विकास और सुरक्षा के लिए विनय बहुत आवश्यक होता है। जिस संगठन के सदस्यों में विनय की भावना होती है, विनयपूर्ण व्यवहार होता है, वह संगठन स्वस्थ और प्रशस्त रह सकता है। जिस संगठन में विनय की परंपरा नहीं होती, विनय को महत्त्व नहीं दिया जाता, उस संगठन के सामने खतरा है।

हमारे धर्मसंघ में विनय के संस्कार भी दिए गए हैं और विनय की परंपरा भी रही है। विनय से चित्त में शांति और संगठन के सदस्यों में पारस्परिक सौहार्द बना रह सकता है। उद्दंडता की स्थिति में सौहार्द कैसे रह सकता है? अनुशासन तब तक चल सकता है, जब तक विनय की परंपरा होती है। किस पर कितनी कड़ाई की जाए, उलाहना भी किसको कितना दिया जाए, यह ध्यान देने योग्य बात होती है। अनुशासन का डंडा वहां चल सकता है, जहां विनय रूपी पात्र होता है। सौभाग्य से हमारे धर्मसंघ में विनय के संस्कार दिए गए हैं।

आज्ञा का पालन भी विनय की स्थिति में अच्छा होता है। मर्यादा पत्र में उल्लिखित है--'आणं सम्मं आराहइस्सामि' मैं आज्ञा की सम्यक् आराधना करूंगा। आज्ञा की सम्यक् आराधना तब हो सकती है, जब विनय का भाव होता है। हमारे धर्मसंघ में एक आचार्य की आज्ञा को बहुत महत्त्व दिया गया है। हमारे धर्मसंघ में आचार्यों की आज्ञा को चुनौती देने का साहस लगभग कोई नहीं कर रहा है। यह हमारे धर्मसंघ का सौभाग्य कहें, संघीय संस्कार कहें या आचार्यों की पुण्यवत्ता कहें कि संघ के सदस्यों में आचार्यप्रवर की आज्ञा के प्रति सम्मान का भाव है। जयाचार्य युवाचार्य काल में थे। उन्होंने आज्ञा पर कितना ध्यान दिया। वे चतुर्मास के लिए बीदासर पधार गए थे। चतुर्मास का समय भी निकट आ गया था। आचार्यश्री रायचंद्रजी का निर्देश मिला कि युवाचार्य जीतमलजी बीकानेर चतुर्मास करें। बीदासर के श्रावकों ने सोचा कि यह क्या हो गया। चौमासा निकट आ गया और अब विहार करा रहे हैं। उन्होंने युवाचार्यश्री से निवेदन किया--'आप तो बुद्धिमान हैं, कोई गली निकालिए, जिससे आज्ञा का सीधा उल्लंघन भी न हो और बीदासर में चतुर्मास भी

हो जाए। युवाचार्यश्री ने कहा--'गळी काढे गिंवार। मुझे तो आचार्यश्री की आज्ञा का अक्षरशः पालन करना है।' वे भयंकर गर्मी में बीदासर से विहार कर बीकानेर पहुंच गए और वहां चतुर्मास किया। विनय के बिना आज्ञा में भी गली निकालने की बात हो सकती है।

दूसरी बात बताई गई--'मेरं सम्मं पालइस्सामि' मैं मर्यादा की सम्यक् पालना करूंगा। हमारे धर्मसंघ में मर्यादा महोत्सव का आयोजन होता है अर्थात् मर्यादाओं को कितना सम्मान दिया गया है। मर्यादा का पालन करने के लिए भी विनय का भाव आवश्यक होता है। उसके बिना मर्यादा मात्र अनुशासन संहिता, मर्यादावली, श्रावक-संदेशिका आदि में अंकित ही रह सकती है।

तीसरी बात बताई गई--'आयरियं सम्मं आराहइस्सामि' मैं आचार्यप्रवर की सम्यक् आराधना करूंगा। आचार्यप्रवर के साथ बात करने, उनके आसपास बैठने, चलने आदि क्रियाओं में भी विनय रहना चाहिए। मैंने कई बार देखा कि साध्वियां मेरे सामने से कम जाती हैं। वे जैसे-तैसे मार्ग खोजकर साइड से जाने का प्रयास करती हैं। यह भी अच्छी परंपरा है कि दूसरा मार्ग है तो आचार्यप्रवर के सामने से नहीं निकलना। हमारी यह भी परंपरा रही है कि गुरु के सामने से निकलना हो तो मस्तक झुका कर निकलना। आचार्यप्रवर से बात करनी हो तो सामान्यतया बद्धाजंलि रहना। पूज्य व्यक्ति आसपास में विराजमान हों तो जोर से नहीं बोलना। पास में कमरा हो और वहां से आवाज यदि पूज्य व्यक्ति तक जा सकने की संभावना हो तो ज्यादा शोरगुल नहीं करना, ताकि उनके कार्य में बाधा न पड़े।

चौथी बात बताई गई--'गणं सम्मं अणुगमिस्सामि' गण का सम्यक् अनुगमन करूंगा।' गण के प्रति विनय होगा तो उसका सम्यक् अनुगमन हो सकेगा। गण के प्रति निष्ठा रखना और उसका हित हो वैसा प्रयत्न करना चाहिए। शासन की सुषमा को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। गण से ऐक्य भाव रहना चाहिए।

पांचवीं बात बताई गई--'धम्मं न कयावि जहिस्सामि' मैं धर्म को कभी नहीं छोडूंगा।' धर्म के प्रति श्रद्धा और विनय हो तो उसको नहीं छोड़ने की बात भी हो सकती है। धर्म तो सबका सार है। धर्म को कभी नहीं छोड़ना, यह हमारा संकल्प रहना चाहिए।

विनय केवल छोटों के लिए ही नहीं है। छोटे हों या बड़े, विनय तो सबके लिए काम का है। विनय तो अमृत है, जो उसे पीएगा उसका भला होगा। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी बड़े संतों का विनय करते। वे उन्हें वंदन करते और उनके लिए 'आप' शब्द का प्रयोग करते। इस प्रकार आचार्यों में भी विनय होना चाहिए। आचार्य शिष्ट होंगे तो संघ अच्छा चल सकेगा। अच्छा शिष्य कभी अच्छा गुरु बन सकता है। आचार्य महाप्रज्ञजी गुरुदेव तुलसी के प्रति बहुत विनयपूर्ण व्यवहार करते। वे गुरुदेव तुलसी के आसपास चलते तो सामान्यतया कुछ पीछे चलते। व्याख्यान के लिए पधारते तो पहले नीचे विराजकर गुरुदेव को वंदन करते। विनय का संस्कार बहुत अच्छा होता है। छोटे-छोटे साधु-साध्वियों को भी बड़ों के साथ उचित विनयपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। विनय है तो संगठन में प्राणवत्ता रह सकती है। वीतराग प्रभु के प्रति भी विनय रहना चाहिए कि उन्होंने जो कहा वह सत्य ही है। विनयवान व्यक्ति ज्यादा गुस्सा भी नहीं कर सकता। एक विनय से अनेक अच्छाइयों का समावेश जीवन में हो सकता है। हम अपनी आत्मा के लिए और संगठन की स्वस्थता और दीर्घजीविता के लिए भी विनय का व्यवहार करें।

विनय अंतरंग और औपचारिक--दोनों प्रकार का होता है। हमारा विनय मात्र औपचारिक ही न हो, आराध्यों, सिद्धांतों, सच्चाई के प्रति हमारी अंतरंग निष्ठा रहनी चाहिए और बाह्य रूप में जिसके प्रति जितना विनय उचित है, उसके प्रति उतना विनयपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

आचार्य तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया, यह भी विनय की बात है। अन्यथा हाथ में आई हुई सत्ता कौन छोड़ सकता है। विनय का भाव और औचित्य भी होता है तो इस प्रकार पद विसर्जन किया

जा सकता है। आदमी जितना उचित रूप में विनयपूर्ण व्यवहार करेगा, वह उतना बड़ा बन सकेगा। विनय सुख का उपाय है। आज्ञा, मर्यादा, आचार्य, गण और धर्म के प्रति विनय का भाव हमारे धर्मसंघ में पुष्ट और विकसित होता रहे।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ओड़िशा में

सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन

२५ जनवरी। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम मर्यादा समवसरण में 'सर्वधर्म सम्मेलन' के रूप में समायोजित हुआ। जिसमें विभिन्न संप्रदायों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। पुरी के गजपति महाराजा दिव्यसिंह देव भी इस समारोह में विशेष रूप से उपस्थित थे। आचार्यप्रवर के कटक पदार्पण के संदर्भ में गजपतिजी के सुझाव पर ही यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था और उन्होंने ही विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया था। कार्यक्रम में मर्यादा महोत्सव के स्वागताध्यक्ष श्री मंगलचंद चोपड़ा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कटक के रिसर्च स्कॉलर इस्लाम जनाब शकील अहमद ने कहा--'आज इस धर्म सम्मेलन का हिस्सा बनते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है, इसलिए मैं तेरापंथ धर्मसंघ का बहुत आभारी हूं। आज आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि में उपस्थित विभिन्न मजहब के भाई-बहनों के कारण एक सुन्दर माहौल बन गया है और यही हमारा भारत है। हमें गर्व है कि हम इस महान देश के नागरिक हैं। आचार्यश्री महाश्रमणजी भाईचारे, नैतिकता व नशामुक्ति के संकल्पों के साथ अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। इस्लाम भी ऐसे ही भाईचारे की बात करता है। आचार्यश्री! आप ऐसे ही इंसानियत की लौ जगाते रहें।'

ब्रह्मकुमारी के कटक उपक्षेत्र की निदेशक राजयोगिनी ब्रह्मकुमारी कमलेश दीदी ने कहा--'आज मुझे यहां आकर बहुत खुशी हो रही है। हालांकि मैं कल तक बहुत अस्वस्थ थी और मुझे बुखार भी था, आवाज भी नहीं निकल रही थी, लेकिन यहां आकर हमने यह प्रैक्टिल महसूस किया कि ऐसे महान धर्म सम्मेलन में आने के लिए स्वयं परमात्मा ने मदद की। मंच पर विराजमान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी को देखकर बहुत खुशी हुई। जहां संतों का समागम होता है, वहां से भी कल्याण हो सकता है। आज यहां आकर मुझे यह लग रहा है कि लोगों को ऐसे महान संतों की निरंतर संगति प्राप्त होती रहे तो वास्तव में उनके जीवन का कल्याण हो सकता है। महाप्रभु महाश्रमणजी की दया जो मुझे यहां ले आई और मैं सबके सम्मुख उपस्थित हो पाई, यह मेरे लिए परम पिता परमात्मा की कृपा के समान है।'

कटक गुरुद्वारा गुरुनानक दातन साहेब के अध्यक्ष श्री सरदार अवतार सिंह ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी! आप अहिंसा यात्रा के माध्यम से पूरे देश में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का जो संदेश दे रहे हैं, बहुत ही प्रशंसनीय है। आपकी इस अहिंसा यात्रा के द्वारा पूरे समाज को प्रेम, प्यार और सद्भावना का संदेश मिलेगा, जिससे विश्व शांति को बल मिलेगा। मैं सिक्ख समाज की ओर से आपको प्रणाम अर्पित करता हूं।'

क्रिया योग के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष परमहंस प्रज्ञानानंदजी महाराज ने कहा--'मेरा परम सौभाग्य है कि आज आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की परंपरा के सक्षम पट्टधर परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी के सान्निध्य में बैठकर सर्वधर्म सम्मेलन में सद्भावना, शांति के ऊपर ऋषि-मुनियों के विचार को रखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। हम आचार्यश्री के आभारी हैं कि आपने सामाजिक विकृतियों को समाप्त करने के लिए अहिंसा यात्रा के नाम पर भारत ही नहीं, नेपाल और भूटान देश में भी पदयात्रा की है और कर रहे हैं। आचार्यश्री का यह प्रयत्न हमारे लिए आदर्श है और हम इसे अपने जीवन में उतारें। विश्व धर्म सम्मेलन में तेरापंथ धर्मसंघ के समणी वर्ग का आना होता है। हम विश्व में तेरापंथ संप्रदाय का कार्य देखकर प्रसन्न हैं।'

जगन्नाथपुरी के महाराजा गजपति दिव्यसिंह देव ने कहा--'आज इस पावन दिवस में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का महाप्रभु जगन्नाथ प्रभु के क्षेत्र में अभिनन्दन व स्वागत करता हूं। यह पवित्र कटक नगरी आज से लगभग आठ सौ साल पूर्व उत्कल प्रदेश की राजधानी के रूप में स्थापित थी। आचार्यश्री के पावन सान्निध्य में यहां तीन दिवस तक आयोजित मर्यादा महोत्सव में आप सभी ने आध्यात्मिक ऊर्जा ग्रहण की है। आचार्यश्री से बहुत-बहुत आध्यात्मिकता व प्रेरणा सभी कटकवासियों ने प्राप्त की होगी। इस महोत्सव के तुरन्त बाद में आचार्यश्री की सन्निधि में आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन का कार्यक्रम सभी धर्मों के प्रतिनिधियों का अभिनन्दन करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आचार्यश्री के आध्यात्मिक चेतना के जागरण का जो अभियान है, वही विश्व में शांति और सद्भावना की स्थापना का सही उपाय है। जब हर धर्म के गुरु आचार्यश्री की तरह आध्यात्मिक चेतना को आगे ले चलें तो विश्व में शांति स्थापित हो सकती है। जगन्नाथजी के देश में आचार्यश्री की यात्रा आनंदमय हो, संपूर्ण रूप से सफल हो, ऐसी इस सेवक की कामना है।'

कार्यक्रम में दिव्य जीवन संघ, भुवनेश्वर के स्वामी शिवचिदानंद सरस्वती, कटक-भुवनेश्वर के भूतपूर्व विकर जनरल आर्चडायासिस रिवेंड फादर एनसेल्स फ्रांसीस, महाबोधि सोसाइटी भुवनेश्वर के बौद्ध भिक्षु खेन्पो फुन्तसो ग्यालटसेन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

अहिंसा यात्रा प्रणेता परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'मेत्ती मे सव्वभूएसु' जैन वाङ्मय का यह सूक्त मानों सद्भावना और विश्व शांति का संदेश देने वाला है। आदमी के भीतर भावना होती है, उसके आगे 'दुर्' जुड़ जाए तो दुर्भावना बन जाती है और भावना के आगे 'सत्' लग जाए तो वह सद्भावना होती है। भावना बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। जिसकी जैसी भावना होती है, वैसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है। यदि भीतर में प्रेम, मैत्री व स्नेह है तो किसी को चांटा भी मार दिया जाए तो वह संभवतः बुरा नहीं लगता है। प्रेम, मैत्री व स्नेह के बिना आक्रोश रहता है तो थप्पड़ के बिना भी अच्छा नहीं लगता है। आदमी दुर्भावना से बचते हुए सद्भावना को बनाए रखने का प्रयास करे, यह काम्य है।

'विश्व शांति' शब्द के मैं दो अर्थ करता हूं। क्योंकि 'विश्व' शब्द के दो अर्थ हैं--संसार व संपूर्ण। 'विश्व शांति' यानी संसार में शांति। संसार में शांति रहे, युद्ध की स्थितियां उत्पन्न न हों, एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के प्रति मैत्री भाव रखे। विश्व शांति यानी संपूर्ण। शांति गुस्सा, चिंता, भय आदि शांति के बाधक तत्त्व हैं। आदमी इनसे दूर रहने का प्रयास करे और सबके प्रति मंगल मैत्री की भावना हो तो चित्त में शांति रह सकती है। आदमी के भीतर विश्व शांति अर्थात् संपूर्ण शांति हो सकती है।

हम भारत देश में रह रहे हैं। भारत के पास संत संपदा है। कितने-कितने ऋषि-महर्षि अतीत में हुए हैं और आज भी भारत में संत हैं। यह मानों इस देश का सौभाग्य है। संतों की साधना, संतों की वाणी, संतों का उपदेश दुनिया को अच्छा रखने में सहायक होते हैं। भारत के पास संत संपदा के साथ ग्रंथ संपदा भी है। कितने-कितने प्राचीन ग्रंथ भारत के पास हैं। अतीत में अनेक ऋषि-महर्षि, अतीन्द्रिय ज्ञानी भारत में हुए। अतीन्द्रिय ज्ञान बहुत उच्च कोटि का ज्ञान होता है।

भारत में विभिन्न जातियों से जुड़े हुए, विभिन्न संप्रदायों को मानने वाले और विभिन्न भाषा-भाषी लोग हैं। विभिन्नता के होते हुए भी जाति, संप्रदाय आदि को लेकर परस्पर वैर-विरोध न हो, दंगा-फसाद न हो तो सद्भावना रह सकती है। विश्व शांति का बहुत बड़ा आधार है सद्भावना। सद्भावना के आसन पर विश्वशांति विराजमान हो सकती है। हम धर्म से जुड़े हुए लोग अपने-अपने अनुयायियों को अच्छे-अच्छे संस्कार देते रहें और इस बात पर ध्यान देते रहें। उनके जीवन में सद्भावना, नैतिकता और संयम हों। यों सबके अनुयायी अच्छे हो जाएंगे तो विश्व शांति (संसार में शांति) की बात एक सीमा में या पूर्ण रूप में सिद्ध हो सकती है।

संप्रदाय हैं और उनके अपने-अपने ग्रंथ भी हैं। उन सभी ग्रंथों का एक सार है--प्रेम, मैत्री व अहिंसा। जो व्यक्ति प्रेम को आत्मसात कर लेता है, वह पंडित बन जाता है। संप्रदाय बड़ा लाभप्रद हो सकता है। संप्रदाय की आत्मा अहिंसा, संयम आदि रूप धर्म रहना चाहिए। सांप्रदायिक उन्माद न हो तो अच्छा वातावरण रह सकता है और संप्रदाय बड़े कल्याणकारी भी बने रह सकते हैं।'

पूज्यप्रवर ने 'बंदूक और लाइसेंस' से संबंधित कहानी को सुनाकर कहा--'संप्रदाय तो एक प्रकार का लाइसेंस है और अहिंसा, संयम और आध्यात्मिक साधना यह सब असली बंदूक के समान हैं। यदि साधना पुष्ट है तो गुस्सा, अहंकार आदि विकारों से हम अपनी आत्मा की रक्षा और दूसरों का भी कल्याण कर सकते हैं।

हम लोग अभी अहिंसा यात्रा में तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं--सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति। यह त्रयी आदमी-आदमी के जीवन में रहती है तो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व विश्व भी अच्छा रह सकता है। फिर विश्व शांति की बात सहजतया हो सकती है।

आज के कार्यक्रम में विभिन्न संप्रदायों से जुड़े लोग और पुरी के महाराजा गजपति महाराज उपस्थित हैं। महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित होते हैं तो कार्यक्रम की भी शोभा बढ़ जाती है।'

श्री मनसुख सेठिया ने आभार ज्ञापित किया। सम्मेलन की सम्पन्नता के उपरान्त पुरी के महाराजा गजपति दिव्यसिंह देव और सभी धर्मों के प्रतिनिधि पूज्यप्रवर के सम्मुख उपस्थित हुए। सभी ने अपनी-अपनी परंपरानुसार पूज्यप्रवर को वंदन किया। महाबोधि सोसाइटी, भुवनेश्वर के बौद्ध भिक्षु श्री खेन्पो फुन्तसो ग्यालटसेन बोले--'मैं आपके मिशन से बहुत प्रभावित हुआ हूं। आप बहुत ही महान कार्य कर रहे हैं।' कार्यक्रम में विभिन्न संप्रदायों के अनुयायी लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का दूसरा चरण कटक तेरापंथ महिला मंडल के स्वर्णजयंती समारोह के रूप में आयोजित हुआ। इस चरण में कटक तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती सुमन बेताला ने आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। महिला मंडल की सदस्याओं ने गीत का संगान करते हुए पूज्यचरणों में संकल्पों का उपहार प्रस्तुत किया। कटक तेरापंथ कन्यामंडल की संयोजिका सुश्री निहारिका सिंघी ने अपनी कृति 'केच्चर्ड फीलिंग' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की।

महिला मंडल की स्वर्णजयंती के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--तेरापंथ महिला मंडल, कटक के स्वर्णजयंती का अवसर बताया गया है। स्वर्ण कितना आकर्षक होता है। उसमें निखार आ जाता है और यदि 'सोने में सुगंध' की बात हो जाती है तो कहना ही क्या। पचास वर्षों की सम्पन्नता पर तो कुछ प्रौढ़ता आ जाती है। महिला मंडल, कटक में खूब अच्छा कार्य चले। शनिवार को सायं सात से आठ बजे के बीच यथासंभव सामायिक होनी चाहिए। उसमें तेरापंथ प्रबोध का संगान, वाचन आदि होना चाहिए।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

गणतंत्र दिवस एवं कटक के साप्ताहिक प्रवास का अंतिम दिन

२६ जनवरी। भारत का गणतंत्र दिवस। कटक में पूज्यप्रवर के प्रवास का अंतिम दिन। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम प्रवास स्थल में ही आयोजित हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भाव शुद्धि की पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने गणतंत्र दिवस के प्रसंग में कहा--'आज २६ जनवरी है। भारत का गणतंत्र दिवस है। भारत के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण दिन है। नागरिकों में अपने-अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव देखने-जानने को मिलता है। राष्ट्र की दृष्टि से देशभक्ति का बड़ा महत्त्व है। भारत के लोग यह सोचें कि हमारे द्वारा ऐसा कार्य न हो कि जो हमारे राष्ट्र और हमारी आत्मा के लिए अहितकर हो। यह भी राष्ट्रभक्ति का एक आयाम है।'

पूज्यप्रवर ने कटक प्रवास की सम्पन्नता के संदर्भ में कहा--'कटक में १५४वें मर्यादा महोत्सव का समारोह सम्पन्न हो गया। हमारा प्रवास अब सम्पन्नता की ओर है। अब तो आगे बढ़ना है। आज शाम को तेरापंथ भवन में जाना है। कटक में खूब अच्छा आध्यात्मिक-धार्मिक माहौल रहे।'

पूज्यप्रवर के कटक प्रवास की सम्पन्नता के संदर्भ में कार्यक्रम के दौरान कटकवासियों की ओर से मंगल भावना का उपक्रम भी रहा। इस उपक्रम में कटक मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी, महामंत्री श्री माणकचंद पुगलिया, तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री मोहनलाल चोरड़िया, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती इंदिरा लूणिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष श्री अरविन्द सिंघी, अणुव्रत समिति के मंत्री श्री मुकेश डूंगरवाल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री धनंजय बांठिया, श्री पानमल नाहटा, श्री मिलापचंद चोपड़ा, श्री हनुमान सिंघी, महासभा के निवर्तमान महामंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला, कन्या मंडल की संयोजिका सुश्री निहारिका सिंघी, श्रीमती पुष्पा सिंघी, श्री दीपक सिंघी ने पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए।

महिला मंडल ने मंगलभावना गीत का संगान किया। ओड़िशा क्रिकेट एसोसिएशन के निवर्तमान सेक्रेटरी श्री आशीर्वाद बेहरा ने भी पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए।

महासभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री हंसराज बेताला ने पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए स्वयं द्वारा मनोनीत पदाधिकारियों सहित कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों के तथा विभिन्न विभागों के संयोजकों के नामों की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी तथा श्री मुकेश सेठिया ने किया।

मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवास संपन्न कर दक्षिण की ओर प्रस्थित हुआ महासूर्य

कटक का मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवास सम्पन्न कर पूज्यप्रवर आज सायं करीब ४.२१ बजे बाराबाटी स्टेडियम के सचिन तेंदुलकर इंडोर हॉल से कटक के तेरापंथ भवन की ओर प्रस्थित हुए। इस अवसर पर कटक के न केवल तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज के लोग भी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। पूज्यप्रवर परिसर से बाहर पधारे ही थे कि किसी मंदिर की ओर जाता हुआ एक जुलूस, जिसमें नारियल आदि मंगल द्रव्य भी थे, समीप से गुजरा। लोग दक्षिण यात्रा की दृष्टि से प्रस्थित अहिंसा यात्रा के लिए इसे शुभ सगुन मान रहे थे।

विहार के दौरान अनेक जैन-जैनेतर लोगों ने अपने-अपने घरों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने 'दाणाण सेट्ठं अभयप्पाणं....' अथवा 'पन्नगे च सुरेन्द्रेच...' श्लोक का उच्चारण किया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जन्मस्थली के रूप में ख्याति प्राप्त स्थान दूर से पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। आचार्यप्रवर लगभग ३.२ कि.मी. का विहार कर कटक के काट घोड़ासाई क्षेत्र में स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। आज का रात्रकालीन प्रवास यहीं हुआ।

कटक से मंगल प्रस्थान

२७ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः कटक के तेरापंथ भवन से 'नाराज' गांव की ओर प्रस्थान किया। इससे पूर्व आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन के ऊपरी मंजिलों के विषय में अवगति प्राप्त कर श्रद्धालुओं को मंगलपाठ सुनाया। पूज्यप्रवर मुनि आकाशकुमारजी की संसारपक्षीया मां को दर्शन देने कुछ चक्कर लेकर उनके घर में पधारे और वहां आसीन होकर परिजनों को कुछ समय उपासना का अवसर प्रदान किया। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात सिंघी परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। विहार के दौरान अनेक श्रद्धालु परिवारों को अपने-अपने घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शन और श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर कटक के स्थानकवासी समाज की प्रार्थना को स्वीकार कर मार्ग से कुछ भीतर स्थित अहिंसा भवन में पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान हुए। भवन से

जुड़े कार्यकर्ताओं ने आचार्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा कि हम आपके पदार्पण से धन्य हो गए। पूज्यप्रवर ने समुपस्थित लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान की।

कटक शहर में स्थान-स्थान पर जैनेतर लोग भी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। कोई पूज्यचरणों में अर्पित करने फूल लेकर आया था तो किसी ने अपने घर के आसपास पूज्यप्रवर के चित्र से युक्त विशाल बैनर लगा रखा था। पूज्यप्रवर सबके श्रद्धा भावों को स्वीकार कर उन पर आशीष वृष्टि कर रहे थे। ओड़िशा उच्च न्यायालय भवन दूर से पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। सिद्धेश्वर सांड आश्रम के बाहर उससे संबद्ध कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। मार्ग में बिहार के शैलेन्द्र शर्मा नामक व्यक्ति ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए, उन्होंने कहा--'मैं संस्कार चैनल पर प्रतिदिन गुरुजी के प्रवचन सुनता हूं। आज साक्षात दर्शन कर धन्य हो गया।' लगभग १३.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'नाराज' गांव में स्थित सिद्धेश्वर हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में दुर्लभ मानव जीवन का लाभ उठाने की पावन प्रेरणा प्रदान की।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री विभूतिभूषण स्वांई ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आज रात्रि में पटनागढ़ के विधायक और ओड़िशा विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री कनकवर्धन सिंह देव ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आपकी पवित्र यात्रा से देश में अवश्य बदलाव आएगा

२८ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः 'नाराज' गांव से राजनगर की ओर प्रस्थान किया। नाराज गांव के ग्रामीण अपने-अपने घरों के बाहर के स्थान को स्वच्छ बनाकर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही उन लोगों ने पूज्यचरणों में बद्धांजलि होकर प्रणति अर्पित की। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। सानो मुंडली, मुंडली और बेटाखोली के ग्रामीणों ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। महानदी के 'नाराज' नामक बांध पर बने पुल से आचार्यप्रवर इस पार पधारे। लगभग १५.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर राजनगर में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि को व्याख्यायित किया। समुपस्थित ग्रामीणों, शिक्षकों व विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर से प्रेरणा प्राप्त कर अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित नवरंगपुर के सांसद श्री बलभद्र मांझी ने कहा--'यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन प्राप्त हुए। आज का दिन मेरे जीवन का अत्यंत सौभाग्यशाली दिन है, क्योंकि आज मुझे गुरुजी के दर्शन ही नहीं, उनसे कुछ बात करने का भी अवसर प्राप्त हुआ। यह मेरे जीवन की अमूल्य निधि बन गई। गुरुजी! आपके ज्ञान और आचार के सामने मैं कुछ बोल सकूं, ऐसा मुझमें सामर्थ्य नहीं, किन्तु जनता का सेवक होने के नाते मैं अपने दायित्व का निवर्हन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। आचार्यश्री! आपने अहिंसा यात्रा के माध्यम से अपने नन्हें चरणकमलों से हजारों किलोमीटर की भूमि नाप ली है, यह जानकर मैं अभिभूत हूं। आपकी अहिंसा यात्रा के संकल्प एक सुन्दर देश का निर्माण करने की सक्षमता रखते हैं। आपकी इस पवित्र यात्रा से देश में अवश्य बदलाव आएगा। आज आपके प्रवचन से मुझे अपने जीवन के उद्देश्य के विषय में नया बोध मिला है। आपके ऐसे प्रवचनों से हर व्यक्ति का मन परिवर्तित हो सकता है। आपसे प्रेरणा प्राप्त कर आने वाली पीढ़ी भी कल्याण की ओर बढ़ सकती है।'

श्री मांझी ने आगे कहा--'गुरुदेवजी! आप का ओड़िशा में लंबा प्रवास है, लेकिन मुझे दुःख है कि आपकी इस यात्रा में मेरा लोकसभा क्षेत्र नवरंगपुर नहीं आ रहा है। नवरंगपुर भारत का सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। उसमें आपका आगमन नहीं हो रहा है। मैं आपके संदेशों को लेकर अपने संसदीय क्षेत्र में जाकर यह प्रयास करूंगा कि आपके विचारों से सभी के जीवन में बदलाव आए।'

गांव के सरपंच श्री महेन्द्र कुमार परिठा ने कहा--'मैं राजनगर ग्राम पंचायत की संपूर्ण जनता की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी को कोटि-कोटि वंदन करता हूं। गुरुजी! आपके आगमन से आज हमारे गांव की माटी चन्दन बन गई। आपकी यात्रा के तीनों संदेश हमारे दिल को छू गए हैं। अब हम इनका उम्रभर पालन करेंगे। आपकी ये तीन बातें हमें निश्चित रूप से मुक्ति की ओर ले जाएंगी। जो लोग आपके इस मिशन से प्रेरित होकर संकल्प स्वीकार करेंगे, उनका जीवन अवश्य सुधरेगा, यह मेरा विश्वास है। आपके संदेशों से हमारे गांव का ही नहीं, पूरे भारत का कल्याण हो जाएगा।'

उच्च प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती ममता मंजरी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आज दिन-रात्रि में स्थानीय ग्रामीण जनता बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुई। पूज्यप्रवर ने रात्रिकालीन कार्यक्रम में पधारकर बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को संबोधित किया।

२६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः राजनगर से शंकरपुर की ओर प्रस्थित हुए। विहार के दौरान आठगांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर ने कटक जिले की सीमा को अतिक्रांत कर ढेंकानाल जिले में प्रवेश किया। करीब १३.० कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर शंकरपुर में स्थित नोडल उच्च विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अभय चेतना के विकास की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति व प्रेरणा प्राप्त कर समुपस्थित ग्रामीणों, शिक्षकों व विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्पों को स्वीकार किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री देवेन्द्र कुमार सेठी ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

शंकरपुर ग्राम पंचायत की ओर से सरपंच श्री श्रीनिवास साहू ने पूज्यप्रवर के स्वागत में श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी।

३० जनवरी। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः शंकरपुर से भापुर के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती इच्छापुर के ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इस क्षेत्र में पत्तागोभी और फूलगोभी की पैदावार बहुतायत में दृष्टिगोचर हुई। प्रायः अधिकांश खेतों में दोनों प्रकार की गोभी प्रचुर मात्रा में दिखाई दे रही थी। इच्छापुर में एक ट्यूशन में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने भी आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। पार्श्वमेश्वर और सारोखापटना के ग्राम्यजन भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। सारोखापटना स्थित श्री अरविंदो इंटरगल एजुकेशन सेंटर के विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर को बद्धांजलि और नतसिर होकर वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने पावन आशीर्वाद प्रदान किया। लगभग ६.५ किलोमीटर का विहार कर आचार्यप्रवर भापुर में पधारे। भोलेश्वर धल उच्च विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में अवमोदरिका के तीन प्रकारों--उपकरण अवमोदरिका, भक्तपान अवमोदरिका और भाव अवमोदरिका को व्याख्यायित किया। आचार्यप्रवर ने चतुर्दशी के संदर्भ में हाजरी वाचन के प्रसंग में उपस्थित साधु-साध्वियों को विभिन्न शिक्षाएं और हाजरी वाचन के दौरान संघीय मर्यादाओं के प्रति सजग रहने की प्रेरणा प्रदान कीं।

हाजरी वाचन के उपरान्त बालयोगी मुनि प्रिंसकुमारजी, मुनि केशीकुमारजी, मुनि जयदीपकुमारजी, साध्वी विशालप्रभाजी और साध्वी आदित्यप्रभाजी ने लेखपत्र उच्चरित किया। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

साध्वीश्री मंजुबालाजी (मोमासर) का प्रयाण

गत २८ जनवरी को जोधपुर में प्रवासित शासनश्री साध्वी मंजुबालाजी का प्रयाण हो गया। आज के मुख्य कार्यक्रम में उनकी स्मृति सभा का उपक्रम रहा। कार्यक्रम में उनके विषय में उद्गार व्यक्त करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी मंजुबालाजी संसारपक्ष में मोमासर के सेठिया परिवार से संबंधित थीं। विक्रम संवत २०२३ में करीब उन्नीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के बाद करीब आठ वर्षों तक वे गुरुकुलवास में रहीं। उसके बाद अर्थात् विक्रम संवत २०३१ से साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं) के साथ रह रही थीं। वे साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी मंगलप्रज्ञाजी, साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समप्रभाजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी, साध्वी समत्वप्रभाजी और साध्वी पल्लवप्रभाजी की संसारपक्षीय ज्ञाति साध्वी थीं। उन्होंने संस्कृत व प्राकृत भाषा का अध्ययन किया। सूक्ष्म लिपिकला में उन्हें दक्षता प्राप्त थी। मैंने कटक मर्यादा महोत्सव के अवसर पर उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। विक्रम संवत २०७४ माघ शुक्ला ११/१२ को अपराह्न करीब २.४५ बजे अमरनगर, जोधपुर में वे कालधर्म को प्राप्त हो गईं। वे एक अच्छी साध्वी थीं। करीब सत्तर वर्षों का उनका जीवनकाल रहा। वे साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं) की विद्यमानता में ही चली गईं, सहवर्ती साध्वी अग्रणी के सामने चली गईं। साध्वी मंजुबालाजी की आत्मा आध्यात्मिक उत्थान करती रहे, मंगलकामना।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वी मंजुबालाजी की दीक्षा गुरुदेव तुलसी की श्रीगंगानगर यात्रा में हुई थी। वे दक्षिण यात्रा में गुरुदेव के साथ में रहीं थी। उस यात्रा में हम छोटी साध्वियों की एक मंडली थी। हम लोग प्रायः साथ-साथ रहती थीं। उस समय साध्वी मंजुबालाजी मेरे साथ पढ़तीं, हमने साथ में स्वाध्याय किया। मैंने उनको निकटता से देखा कि वे एक सुयोग्य साध्वी थीं। यदि उन्हें अग्रगण्य बनने का मौका मिलता तो वे एक सुयोग्य अग्रगण्य भी बन जातीं। उनमें सेवाभावना, विनम्रता और अध्ययनशीलता थी। संस्कृत-प्राकृत भाषा का उन्होंने अच्छा अध्ययन किया। साध्वीश्री चांदकुमारीजी के साथ रहकर उन्होंने साध्वीश्री राकेशकुमारीजी से सिलाई-रंगाई आदि की कला में दक्षता प्राप्त कीं। उनकी बहन प्रवीणा दीक्षा लेने की भावना से संस्था में प्रविष्ट हुई थीं, किन्तु वह संस्था में ही दिवंगत हो गईं। वह भी सुयोग्य मुमुक्षु थीं, किन्तु उनकी दीक्षा भावना पूरी नहीं हो सकी। साध्वी मंजुबालाजी के रूप में धर्मसंघ की एक अच्छी साध्वी की कमी हो गई। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती रहे। आचार्यप्रवर की कृपा से धर्मसंघ में अच्छी साध्वियों की संख्या बढ़ती रहे। मंगलकामना।'

साध्वी मंजुबालाजी की स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ ने आचार्यप्रवर के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया।

शासन गौरव साध्वी कल्पलताजी, शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी और साध्वी आरोग्यश्रीजी ने भी साध्वी मंजुबालाजी के विषय में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आपके आगमन से पावन हुई हमारी धरती

३१ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः भापुर से गंडानाली के लिए प्रस्थान किया। भापुर और खापदा के ग्रामीण विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। स्थान-स्थान पर बने मंदिर ओड़िशा में हिन्दुओं के प्रभाव को दर्शाते हैं। प्रायः हर मंदिर के बाहर शेर की मूर्तियां बनी

हुई हैं। वृंदावनपुर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर के संचालक श्री द्वारिकानाथ राउत तथा प्रधानाध्यापक श्री प्राणबंधुदास ने पूज्यप्रवर से अपने विद्यालय में पधारने का अनुरोध किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें व विद्यालय के विद्यार्थियों को वहीं से आशीर्वाद प्रदान किया। उन्होंने पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय के मुख्य द्वार के निकट फूल और चावल बिछवाए। श्री राउत बोले--'हमारा सौभाग्य है कि इतने बड़े संत यहां आए हैं। आपके आने से हमारी भूमि पावन हो गई। आपकी कृपा हम पर बनी रहे।' पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने उन्हें व विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए। पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। लगभग १५.० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर गंडानाली में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में सत्संगत के महत्त्व को विवेचित किया। पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री नटवर नायक ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात्रि में स्थानीय ग्रामीण लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी अच्छी संख्या में उपस्थित ग्राम्यजनों को पूज्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ।

मैं तो आपको पच्चीसवां तीर्थंकर मानता हूं

१ फरवरी। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः गंडानाली से सातमाइल की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में गंडानाली के कई ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को साष्टांग वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। तेलभुईन बाजार और रसौल के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। लगभग १३.३ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर सातमाइल में स्थित जनता कालेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में 'पुनर्जन्म' के सिद्धांत की व्याख्या की। आचार्यप्रवर ने समुपस्थित ग्रामीणों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को जैन साधुचर्या और अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

जनता कालेज के प्राचार्यश्री प्रमोद मिश्र ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी अविभक्त भारत के गौरव हैं। आप भारत के गौरव को बढ़ाने के लिए अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। मैं तो आपको जैन धर्म का पच्चीसवां तीर्थंकर मानता हूं। हमारे कालेज परिसर और सातमाइल गांव में आपका हृदय से स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

अनगुल पर अनुग्रह कर बदला यात्रा पथ

२ फरवरी। अहिंसा यात्रा के पूर्व निर्धारित पथ के अनुसार पूज्यप्रवर का अनगुल पधारना तय नहीं था, किन्तु अनगुलवासियों की प्रार्थना पर अनुग्रह करते हुए पूज्यप्रवर ने कुछ अतिरिक्त चलना स्वीकार किया। इसलिए आज के विहार पथ में कुछ परिवर्तन हुआ। पूज्यप्रवर प्रातः सातमाइल से महीधरपुर की ओर प्रस्थित हुए। आज का विहार पथ प्राकृतिक सुषमा लिए हुए था। हरे-भरे पहाड़ों से घिरे वनीय पथ के आसपास आबादी और खेती कम ही दृष्टिगोचर हुई। मार्गवर्ती दुधूरकोट, हरिहरपुर और कुरूमीट्ठा के ग्राम्यजन आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। हाटुरा स्थित शिशु मंदिर स्कूल के विद्यार्थियों ने अपने विद्यालय के समीप कतारबद्ध और करबद्ध होकर पूज्यप्रवर को वंदन किया। 'स्वागतम-सुस्वागतम' की सामूहिक ध्वनि से विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर का स्वागत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री वत्स राउत ने भी पूज्यप्रवर का भावभीना वंदन किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। लगभग ११.८

कि.मी. विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर महीधरपुर में पधारे। पंचायत नोडल हाइस्कूल में आज का प्रवास हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में मोक्ष प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'चित्त समाधि की बात आती है। वास्तव में तो चित्त समाधि हमारे भीतर में ही है। दूसरा निमित्त भले बन जाए, किन्तु मूलतः चित्त समाधि व्यक्ति के अपने भीतर में ही रहनी चाहिए। कोई यह कह दे कि अमुक साधु मेरे पास रहे तो ही मेरे चित्त समाधि रहेगी, यह कोई बड़ी बात नहीं है। कोई साधु पास में रहे अथवा न रहे, अपनी चित्त समाधि अपने हाथ में रहनी चाहिए। किसी के रहने या न रहने से चित्त समाधि खण्डित नहीं होनी चाहिए। परसापेक्ष चित्त समाधि कोई बड़ी बात नहीं होती। सभी साधु-साध्वियां ऐसा विकास करें कि उनकी चित्त समाधि दूसरों के नहीं, स्वयं के हाथ में रहे।

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से महीधरपुरवासी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा की संकल्पत्रयी स्वीकार की। विद्यालय के शिक्षक श्री भुवनेश्वर बेहरा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

साध्वी कमलरेखाजी की स्मृतिसभा

गत ३१ जनवरी को हिसार में साध्वी कमलरेखाजी (लाडनूं) कालधर्म को प्राप्त हो गईं। आज के कार्यक्रम में उनकी स्मृति सभा का उपक्रम रहा। कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने साध्वी कमलरेखाजी के विषय में कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी कमलरेखाजी संसारपक्ष में लाडनूं के बरमेचा परिवार से संबद्ध थीं। विक्रम संवत २०३२ में उन्होंने करीब इक्कीस वर्ष की अवस्था में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। वे साध्वी भीखांजी (श्रीडूंगरगढ़) के साथ करीब सात वर्षों तक रहीं। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने सन् २००७ में उन्हें अग्रगण्य के रूप में नियुक्त किया। विक्रम संवत २०७४ की माघ शुक्ला पूर्णिमा को प्रातः करीब ६.२२ बजे हिसार में वे कालधर्म को प्राप्त हो गईं। तीन साध्वियों का उनका सिंघाड़ा था। उनके सिंघाड़े की यह विशेषता प्रतीत हो रही है कि कभी परवर्तन भी बात नहीं आई। गत कुछ समय पूर्व साध्वी कमलरेखाजी अस्वस्थ हो गई थीं। उपचार का प्रयास किया गया। हमें संवाद मिला कि वे काफी स्वस्थ हो गई हैं, किन्तु पुनः स्थिति बिगड़ी और उनका निधन हो गया। उनकी आत्मा मोक्ष की दिशा में अग्रसर रहे। उनकी सहवर्ती दोनों साध्वियां अच्छा कार्य करें। यथासंभव अच्छी सेवा करें और अच्छा विकास करें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस संदर्भ में कहा--'साध्वी कमलरेखाजी संसारपक्ष में लाडनूं की दूसरी पट्टी के बरमेचा परिवार से संबंधित थी। बरमेचा परिवार में श्रावक मन्नालालजी, शोभालालजी, भोपतरामजी आदि अच्छे श्रद्धालु और शासन भक्त श्रावक थे। मन्नालालजी को कई बार साध्वियों का शय्यातर बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मन्नालालजी के सुपुत्र श्री सोहनलालजी की सुपुत्री थीं साध्वी कमलरेखाजी। उनके संसारपक्षीय पिता भोपतरामजी के गोद आ गए थे। भोपतरामजी की धर्मपत्नी श्रीमती मनोहरीदेवी अच्छी श्राविका थीं। उनका तत्त्वज्ञान अच्छा था।

साध्वी कमलरेखाजी दीक्षित होने के बाद साध्वी कमलूजी (सरदारशहर) के साथ रहीं और उनकी उन्होंने अहोभाव के साथ बहुत अच्छी सेवा भी की। साध्वी कमलूजी के प्रयाण के बाद वे लंबे समय तक साध्वीश्री भीखांजी के साथ भी आत्मीय भाव से रहीं। साध्वी कमलरेखाजी सहज और सरल साध्वी थीं। इन वर्षों में वे काफी अस्वस्थ रहती थीं। कुछ समय पूर्व वे और ज्यादा अस्वस्थ हो गईं। परम पूज्य आचार्यप्रवर की कृपा से हिसार में उनका उपचार हो रहा था। उनका ऑप्रेशन हुआ। ऑप्रेशन के बाद वे स्वस्थ भी लग रही थीं

तो उनके साथ सेवा में नियुक्त समणियों ने आचार्यप्रवर से निवेदन करवाया कि साध्वी कमलरेखाजी अब स्वस्थ हैं तो हमारे लिए अब क्या निर्देश है। यह परम पूज्य आचार्यप्रवर की दूरदर्शिता थी कि स्वस्थता का संवाद मिलने पर भी आचार्यप्रवर ने समणियों को वहीं रहने का निर्देश दिया। प्रथम दिन तो साध्वी कमलरेखाजी के स्वास्थ्य में सुधार का संवाद आया और दूसरे दिन उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने सहजता और सरलता से संयम का पालन किया और वे चली गईं। उनकी आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास करती रहे, मंगलकामना।'

अनगुल क्षेत्र में अहिंसा यात्रा का भावभीना स्वागत

३ फरवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः महीधरपुर से खल्लारी की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती नोपाल ग्रामवासी और नोपाल प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इसी प्रकार खण्डाहोता के ग्रामीणों और खण्डाहोता यूपी स्कूल के विद्यार्थियों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। पूज्यप्रवर करीब १६.० कि.मी. का विहार कर अनगुल के निकटस्थ खल्लारी गांव में पधारे। अनगुल के श्रद्धालु परिवारों, मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष श्री रणजीत मांडोडिया, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के चेयरमेन श्री अशोक जैन आदि ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। खल्लारी के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के स्वागत में सोत्साह उपस्थित थे। अपने-अपने घरों के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ और स्वागतार्थ खड़ी महिलाएं 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर रही थीं। खल्लारी हाइस्कूल में आचार्यप्रवर का आज का प्रवास हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् श्रद्धा और सम्यक् आचरण को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति एवं प्रेरणा प्राप्त कर कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित स्थानीय विधायक श्री रजनीकांत सिंह आदि गणमान्य महानुभावों, अन्य ग्रामीणों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की।

श्री संजीव जैन ने अनगुल क्षेत्र में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की।

अनगुल क्षेत्र विधायक श्री रजनीकांत सिंह ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी आज हमारे क्षेत्र में पधारे हैं, यह हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है। मैं हमारे क्षेत्र की समस्त जनता की ओर से आपका स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प हर मानव का उद्धार करने वाले हैं।'

अनगुल मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष श्री रणजीत मंडोडिया ने कहा--'मैं समस्त अनगुलवासियों की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में शत-शत नमन करता हूं। आपके दर्शन और आपकी सेवा का अवसर पाकर हम अभिभूत हैं। अहिंसा यात्रा के मिशन को फैलाने के लिए हम सतत प्रयत्नशील रहेंगे।'

बीजेपी की ओर से श्री लूलू भाई ने कहा--'हमारे अनगुल क्षेत्र का सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महापुरुष यहां पधारे हैं। ऐसी यात्रा मैंने कभी नहीं देखी। यह एक ऐतिहासिक यात्रा है। इस यात्रा के तीनों उद्देश्य पूरे भारत देश की आवश्यकता है। हर व्यक्ति के लिए ये तीनों उद्देश्य उपयोगी हैं।

एडवोकेट श्री बावरी बंधोमहापाध्याय ने कहा--'मैं अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का स्वागत करते हुए स्वयं को बहुत गौरवान्वित और सौभाग्यशाली महसूस कर रहा हूं। आपके प्रवचन से हमें जो ज्ञान हुआ है, वह अद्भुत है। आप जैसे महान राष्ट्रसंत का पदार्पण हमारे लिए अत्यंत गौरव का विषय है। मैं आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ओर से श्री शशि भाई ने कहा--'आचार्यश्री! विगत पांच दिनों से हम आपकी यात्रा के साथ जुड़े हुए हैं। कल अचानक पता चला कि आपका मार्ग परिवर्तन हुआ है और आप

अनगुल में पधार रहे हैं। मुझे यह जानकर ऐसा लगा कि अनगुलवासियों का भाग्योदय हो गया। आप आज अनगुल जिले में विराजमान हैं, यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है। बिना सौभाग्य के आप जैसे महान संत के दर्शन दुर्लभ होते हैं। गुरुजी! आपने जो तीन बातें बताई हैं, वे हम सभी का कल्याण करने वाली हैं। गुरुजी! आपका मिशन सफल हो, ताकि पूरे भारत का कल्याण हो।'

खल्लारी नोडल हाइस्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मंजू बेहरा ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी।

नवीन घोषित चतुर्मास

१. मुनिश्री संजयकुमारजी	कामरेज	२. मुनिश्री रणजीतकुमारजी	यशवंतपुर, बेंगलुरु
३. मुनि जिनेशकुमारजी	पूना	४. मुनि हिमांशुकुमारजी	जगराओं, पंजाब
५. मुनि भूपेन्द्रकुमारजी	भीम	६. साध्वी उज्ज्वलकुमारीजी	अहमदगढ़मण्डी, पंजाब
७. साध्वी तिलकश्रीजी	धूरी	८. साध्वी मधुस्मिताजी	विजयनगर, बेंगलुरु
९. साध्वी पावनप्रभाजी	ब्यावर	१०. साध्वी कैलाशवतीजी	अम्बाजोगाई, महाराष्ट्र

आचार्यप्रवर को आंध्रप्रदेश राज्य सरकार द्वारा राजकीय अतिथि का सम्मान समर्पित

अहिंसा यात्रा प्रणेता शांतिदूत आचार्यप्रवर को आंध्रप्रदेश सरकार ने अपने राज्य की यात्रा के सन्दर्भ में राजकीय अतिथि का सम्मान समर्पित किया है। आंध्रप्रदेश राज्य सरकार ने ६ फरवरी २०१८ को राज्य के सभी संबंधित विभागों को पत्र के माध्यम से इस आशय की सूचना देते हुए आवश्यक निर्देश जारी किए हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

५१०००/- हंसराज राजकरण शिखरचंद निर्मलकुमार लूणावत गंगाशहर-साउथ हावड़ा।

५१०००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती पुष्पादेवी बाबूलालजी गुगलिया (मोखुन्दा-अहमदाबाद) सुपुत्र व पुत्रवधू पारसमल-अंजू मुकेश-मनिषा सुनील-रेखा राकेश-विनीता सुपौत्र शालीन, रचित मीत गुगलिया परिवार।

५१००/- स्व. विजयराज पुगलिया (सुपुत्र स्व. जीवराज पुगलिया श्रीडूंगरगढ़-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र बंशीलाल सुपौत्र अजीतकुमार नीरजकुमार श्रेयांश पुगलिया।

५१००/- स्व. चंपाबाई शांतिलाल छाजेड़ (औरंगाबाद-कुरहा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र विनोद गोपाल दिनेश छाजेड़।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला